रानी झांसी रेजीमेन्ट को हमारा सलाम

कमला भसीन-रितु मेनन

आज़ादी के पचास साल बाद कैप्टन लक्ष्मी सहगल आज भी उसी लगन से सामाजिक सेवा के काम में लगी हैं। आजादी की 50वीं साल में भारतीय महिला फौज की कैप्टन लक्ष्मी को हम सबका हार्दिक अभिवादन है।

भारत की आज़ादी को पचास बरस हो गए। आज़ादी की पचासवीं वर्षगांठ बड़े जोर शोर से मनाई जा रही है। पूरे साल जलसे, सम्मेलन हुए। दूरदर्शन, रेडियो पर ढेरों प्रोग्राम हुए। अखबारों और पत्रिकाओं में अनगिनित लेख लिखे गए। आज़ादी के पचास सालों पर कई किताबें लिखी गईं। उन लोगों को याद किया गया जिन्होंने आज़ादी की लम्बी लड़ाई में हिस्सा लिया।

हम भी आज कुछ ऐसी महिलाओं को याद कर रहे हैं जिन्होंने आज़ादी के लिए अपनी जान लगा दी। जिन्होंने देश के लिए तन, मन, धन लगाया। हम उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं उनका गुणगान कर रहे हैं और इसके साथ-साथ हम उनसे कुछ सीखने की भी कोशिश कर रहे हैं। उनको याद करने के साथ-साथ हम अपने आप से और आज के जवान लोगों से सवाल कर रहे हैं। वह सवाल है—हम आज अपने समाज और अपने देश को मज़बूत बनाने के लिए क्या कर रहे हैं?

हम आज याद कर रहे हैं रानी झांसी रेजीमेन्ट की रानियों को। 1943 में, यानि आज से 55 साल पहले क़रीब एक हज़ार महिलाएं रानी झांसी रेजीमेन्ट में भर्ती हुईं। उनका मक़सद था भारत की आज़ादी। पता नहीं आप में से कितनों ने औरतों की उस फ़ौज का नाम सुना है। रानी झांसी रेजीमेन्ट सुभाष चन्द्र बोस द्वारा बनाई आज़ाद हिन्द फ़ौज का हिस्सा थी। नेता जी सुभाष चन्द्र बोस का मानना था कि बिना जंग किए अंग्रेज़ों को देश से नहीं निकाला जा सकता। इस जंग या युद्ध के लिए उन्होंने आज़ाद हिन्द फौज बनाई।

यह फ़ौज नेताजी ने देश के बाहर बनाई, क्योंकि देश के अन्दर तो अंग्रेज़ उन्हें बढ़ने नहीं देते। 1943 में सिंगापुर में आज़ाद हिन्द फ़ौज का गठन शुरु हुआ। सिंगापुर, मलेशिया व आस-पास के देशों में बसे हिन्दुस्तानियों को उस फ़ौज में भर्ती किया गया। नेता जी का इरादा था कि तैयार होकर यह फ़ौज अंग्रेज़ों का मुक़ाबला करेगी।

नेताजी का आह्वान

नेताजी ने औरतों की एक अलग रेजीमेन्ट बनाने का फैसला किया और उसका नाम रानी झांसी रेजीमेन्ट रखा। नेताजी का मानना था कि मर्दों के समान औरतें भी आज़ादी की लड़ाई में हिस्सा ले सकती हैं। जवान औरतें फौजियों जैसे लड़ सकती हैं, हथियार चला सकती हैं। कुछ औरतें दूसरे बन्दोबस्त कर सकती हैं। 1943 में सिंगापुर में नेताजी ने लक्ष्मी स्वामीनाथन नाम की 22-23 बरस की महिला को बुलावा दिया औरतों की रेजीमेन्ट बनाने का। लक्ष्मी सिंगापुर में डाक्टर थी। तीन बरस पहले ही वह मद्रास से सिंगापुर आई थीं वहां डॉक्टर की नौकरी करने। लक्ष्मी के मन में आज़ादी के लिए लड़ने की इच्छा पहले से थी। उनके परिवार में काफ़ी पहले से आजादी के चर्चे होते थे। लक्ष्मी की माता अम्मू स्वामीनाथन उनकी मदद करती थी जो आज़ादी के मनसूबे बना रहे थे। नेताजी का बुलावा पाते ही लक्ष्मी ने सिंगापुर में रहने वाली हिन्दुस्तानी औरतों से बातचीत की, उन्हें आज़ादी की लड़ाई में हिस्सा लेने को कहा। तीन दिन के अन्दर सिंगापुर में लक्ष्मी ने 5000 औरतें इकट्ठी कर लीं और नेता जी को इन औरतों से बात करने को कहा। ये औरतें अधिकतर तमिल थीं और उन परिवारों से थीं जो काम की तलाश में सिंगापुर, मलेशिया गए थे।

हम औरतें तैयार हैं

नेताजी ने अंग्रेज़ी में भाषण दिया जिसका अनुवाद लक्ष्मी ने किया तमिल में। उन्होंने अपने भाषण में कहा कि आज़ादी की लड़ाई में हिस्सा लेने से औरतों को भी आज़ादी मिलेगी। वे अपनी आज़ादी के लिए रास्ते बना पायेंगी। औरतें सिर्फ़ मां और पत्नी ही नहीं बन सकतीं। वे चाहें तो सब कुछ कर सकती हैं और समाज में अपने लिए बेहतर जगह बना सकती हैं। साथ ही साथ नेताजी ने

उन्हें यह भी बताया कि फ़ौज का काम जोखिम भरा होगा, ख़तरे मोल लेने होंगे। फिर पूछा "बोलो, तैयार हो भर्ती होने को?"

बड़ी तादाद में औरतें स्टेज की तरफ़ भागीं और कहा वे सब भर्ती होना चाहती हैं। पूरे माहौल में मानो बिजली चमक उठी हो। इतना जोश। कुछ औरतों की गोद में छोटे बच्चे थे—पर वे भी फ़ौज में भर्ती होना चाहती थीं। देश के लिए कुछ करना चाहती थीं।

अगले दिन से रानी झांसी रेजीमेंट की भर्ती चालू हुई। इतनी ज़्यादा औरतें आईं भर्ती होने कि उन सब को लेना मुश्किल हो गया। कुछ को कहना पड़ा कि उनकी उम्र ज़्यादा है, उन्हें नहीं लिया जा सकता। दस औरतों के एक समूह को जब कहा गया कि वे बड़ी उम्र की वजह से भर्ती नहीं हो सकतीं तो वे सब अड़ गईं, बोलीं—भर्ती तो वे होंगी। उनमें से एक ने कहा "ये बताओ कि फौज में आप सब खाना तो खाओगे। खाना बनाने के लिए भी तो लोग चाहिये होंगे। हम खाना बना देंगे।" उन्हें भर्ती करना पड़ा और ये सब औरतें रसोई में खाना पकाने जाने से पहले खाकी वर्दी पहनकर रोज़ परेड करती थीं।

पहली महिला फौज

इस तरह गठन हुआ भारत की पहली व आख़िरी औरतों की फ़ौज का लगभग एक हज़ार औरतों की भर्ती हुई रानी झांसी रेजीमेन्ट में। इसके अलावा दो सौ औरतें नर्सों के रूप में भर्ती हुईं। इन सबको वही ट्रेनिंग दी गई जो मर्दों को दी जाती थी। उनकी वर्दी भी वही थी। इस फ़ौज ने अचानक औरतों की परिभाषा ही बदल दी। यकायक औरतों के बारे में विचार, मान्यतायें

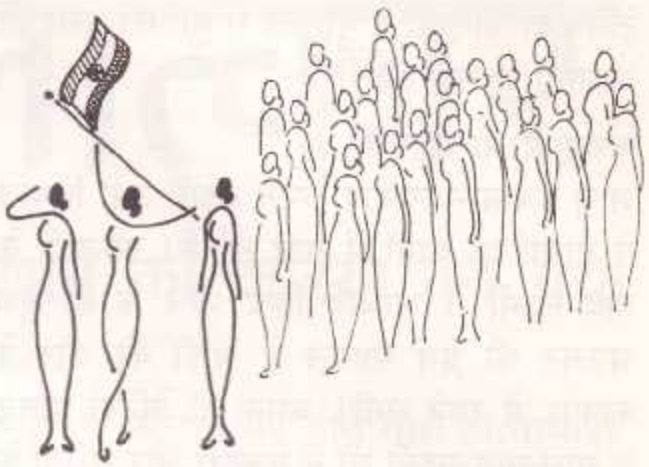

बदलने लगीं। अपनी हिम्मत से औरतों ने बता दिया कि वे किसी तरह भी मर्दों से पीछे नहीं है। आठ औरतों ने अफ़सरों की ट्रेनिंग की और वे अफ़सर बनीं। रानी झांसी रेजीमेन्ट की अगवा थीं लक्ष्मी स्वामीनाथन या कैप्टन लक्ष्मी।

दो ढाई साल तक इन औरतों ने फ़ौज में काम किया। 1945 में कैप्टन लक्ष्मी और उनके कई साथियों को अंग्रेजों ने बन्दी बना लिया। आज़ाद हिन्द फ़ौज भी कुछ अधिक न कर सकी—पर इन सब की हिम्मत और बुलन्द इरादों ने पूरे देश में जोश फैलाया, औरों को हिम्मत दी। कैप्टन लक्ष्मी क़ैद से छूटने के बाद एक साल बर्मा में रहीं। वहां वे घायलों की दवा दारू करतीं, आज़ाद हिन्द फ़ौज के बारे में प्रचार करतीं।

हम सभी रानियों को सलाम करते हैं, उनका अभिनन्दन करते हैं, उनकी हिम्मत, देश-प्रेम और त्याग से प्रेरणा लेते हैं। नेता जी के एक बुलावे पर इतनी सारी बहनें घर बार, बच्चे छोड़कर फ़ौज में भर्ती हो गईं, यह हम सब के लिए बहुत ही गौरव की बात है। इन सब औरतों ने इस बात का सुबूत दिया कि अगर उन्हें मौका दिया जाए, उन्हें काबिल समझा जाए, उन्हें बढ़ावा और

ट्रेनिंग दी जाए तो वे मुश्किल से मुश्किल काम भी आसानी से कर सकती हैं।

कैप्टन लक्ष्मी सहगल

आज पचास साल बाद कैप्टन लक्ष्मी उसी हिम्मत से सामाजिक कामों में लगी हुई हैं। आज़ादी के बाद लक्ष्मी ने आज़ाद हिन्द फ़ौज के ही एक अफ़सर श्री प्रेम सहगल से शादी की और वे कानपुर में रहने लगीं। अपनी दो बेटियां पालने के साथ साथ लक्ष्मी जी ने मज़दूरों और ग़रीबों के लिए एक दवाखाना शुरू किया। उन्होंने मज़दूर यूनियनों की मदद करनी शुरू की। उन्हें जहां लगा कि वे समाज के लिए कुछ कर सकती हैं वे कूद पड़ीं उस काम में। हिन्दुस्तान-पाकिस्तान के बंटवारे के बाद लक्ष्मी जी ने शरणार्थियों के साथ काम किया। 1971 में बंगलादेश की आज़ादी के लिए उन्होंने काम किया। बंगलादेश के शरणार्थियों की मदद की। 1984 में जब कानपुर में सिक्खों के ख़िलाफ दंगे हुए तब भी लक्ष्मी जी फिर से सद्भाव और शान्ति कायम करने के काम में सबसे आगे थीं। 1943 से आज 1998 तक कैप्टन लक्ष्मी उसी लगन से काम कर रही हैं। वे जनवादी महिला समिति, उत्तर प्रदेश की संचालिका रही हैं, अखिल भारतीय प्रजातांत्रिक महिला संघ के साथ वे बरसों से जुड़ी हैं। आज़ाद हिन्द फ़ौज और रानी झांसी रेजीमेन्ट के साथियों की सहायता के लिए लक्ष्मी जी ने बरसों काम किया। आज भी जब वे लगभग 80 वर्ष की हैं वे इन सब कामों में लगी हैं।

लक्ष्मी जी ने अपनी जीवनी भी लिखी और दुनिया को अपने फ़ौज के तजुर्बे बताये, उन सैकड़ों औरतों के बारे में बताया जो सिर पे कफ़न बांधकर निकल पड़ी थीं। यह लक्ष्मी जी की बदौलत है कि आज लोग रानी झांसी रेजीमेन्ट के बारे में जानते हैं। पुरुष इतिहासकार तो भूल ही जाते हैं औरतों के बारे में लिखना। उनके लिए औरतें इतिहास का हिस्सा नहीं हैं। अपनी जीवनी लिखकर लक्ष्मी जी ने भारत के इतिहास में औरतों के योगदान को उजागर किया है। हिन्दी में लक्ष्मी जी की जीवनी तीस बरस पहले छपी थी। अंग्रेज़ी में उनकी जीवनी अभी दो माह पहले छापी है काली फॉर वुमेन ने। उस जीवनी में उनकी हम दोनों के साथ बातचीत के अंश भी हैं। हमने तीन बार कई घन्टों तक लक्ष्मी जी से उनके जीवन के बारे में बातचीत की थी और फिर उसे लिखा और छपवाया। हमारा मक़सद था नई पीढ़ी को लक्ष्मी जी और उनकी रानी झांसी रेजीमेन्ट की साथियों के बारे में बताना ताकि वे उनसे प्रेरणा ले सकें। □

कुछ करने की ठान लें तो क्या नहीं कर सकती हैं हमारी हिम्मत के बूते पर बंजर भी खिल सकती है।